[श्री दौलत राम सारण]

स्वार्थों में दुरुपयोग और उचित पुलिस कार्यों में हस्तक्षेप को बताया है। क्या ये बातें आपके ध्यान में हैं ? इन सब बातों का उत्तर मंत्री महोदय देने का कष्ट करें।

अध्यक्ष महोदय : मैं पहले कि मन्त्री को उत्तर देने के लिए कहूं, प्रधानमन्त्री एक वक्तव्य देंगी।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी (बम्बई उत्तर पूर्व) : आप उनको उत्तर दे रहे हैं या वक्तव्य दे रही है।

प्रधान मन्त्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : मैं माननीय अध्यक्ष के हाथों में हूँ।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी : ठीक है जो कुछ वे कहेंगे आप करेंगीं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : यह ठीक है।

लेबनान पर इजराइली हमले के बारे में वक्तव्य

प्रधानमन्त्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : हाल के वर्षों में किसी भी बात से मानव जाति को इतना दुःख और सदमा नहीं पहुंचा है जितना कि लेबनान पर इज़राइल के आक्रमण से, उनके निर्मम अत्याचारों से और उनके बर्बरतापूर्ण, क्रूर और निर्मम नर-संहार से।

इससे भी ज्यादा शर्मनाक बात यह है कि संयुक्त राष्ट्र के एक ऐसे सदस्य से निपटने में जिससे कि एक दूसरे सदस्य राज्य पर खुल्लमखुल्ला आक्रमण किया है, अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अपने आप को असहाय स्थिति में पा रहा है। सुरक्षा परिषद ने युद्ध-विराम और फौजों की वापसी के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया है। लेकिन इन्हें अहंकारपूर्वक अनदेखा किया गया है। विश्व के नेताओं ने इन कार्रवाइयों की निन्दा की है, लेकिन इजराइल पर इसका कोई असर नहीं पड़ा है। पश्चिमी बेरुत से अपने सैनिकों को वापस हटाते वक्त फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को यह गारंटी दी गयी थी कि फिलिस्तीनी नागरिकों की रक्षा की जाएगी। लेकिन इसके बावजूद एक हजार से ऊपर स्त्री, पुरुषों और बच्चों को इस बुरी तरह मारा गया जो कि दूसरे विश्वयुद्ध के अत्याचारों की याद दिलाता है। हमारे पास इस आशय की भी खबरें हैं कि इज़राइल में फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन के बंदियों को यातनाएं दी जा रहीं हैं।

जैसा कि माननीय सदस्य अच्छी तरह जानते हैं फिलीस्तीनी लोगों के अकल्पनीय दुःखों के प्रति भारत की जनता के मन में भारी सहानुभूति है। उनके दुःख से हमारा मन बहुत दुःखी है और हमें उनसे बहुत हमदर्दी है। उनकी जमीन पर जबरन कब्जा कर लिया गया है। उन्हें बेघर करके उनके घर से बाहर धकेल दिया गया है। पिछले तीस से अधिक वर्षों से वे अपमान, दुःख

और तकलीफों से भरा जीवन जीते रहे हैं।

हम इजराइल के इस आक्रमण को और नर संहार की उनकी इस करतूत को घृणा की निगाह से देखते हैं। हमने अपने विचारों से जनता को, संयुक्त राष्ट्र को और विश्व के बहुत से दूतावासों को अवगत करा दिया है। मैंने विश्व के कई नेताओं को भी इस बारे में लिखा है। इजराइल के इस आक्रमण के बाद से विश्व के जिन अन्य नेताओं से मेरी मुलाकात हुई है उनसे मैंने इस बारे में व्यक्तिगत रूप से भी बात की है। अगर सार्वभौम रूप से स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय कानून और व्यवहार के मापदंडों का पालन और सम्मान करना है, जो निश्चय ही किया जाना चाहिए, तो मानव-जीवन और उसकी सम्पत्ति का उचित सम्मान होना ही चाहिए, चाहे वह यूरोप में हो अथवा अमरीका, अफ्रीका या एशिया में, और विश्व शांति, स्थायित्व तथा सुरक्षा को और अधिक खतरे में पड़ने से बचाया जाना चाहिए। एक न्यायसंगत, न्यायोचित और स्थाई समाधान के लिए हमें मिलकर काम करना होगा।

इसमें तात्कालिकता का भाव भी निहित है। सैनिक विनाश, जन-हानि और लाखों असहाय लोगों के दुःख और संताप के रूप में इसकी एक बहुत बड़ी कीमत पहले ही अदा की जा चुकी है। आज भी पश्चिम एशिया का वातावरण घृणा और क्रोध, बदले और प्रतिशोध की भावना से भरा हुआ है और इसमें अधिकाधिक वृद्धि हो रही है। यह सब खत्म किया जाना चाहिए। ताकत के इस्तेमाल से कभी कोई मसला हमेशा के लिए हल नहीं हुआ। विनाश और हत्या तो आत्म-पराजय है। सब लोगों की भलाई इसी में है कि सभी सहयोग और मित्रता के वातावरण में रहें। जो हमारा नहीं है, उसका हमें न तो लोभ होना चाहिए और न उसे हम रख सकते हैं। हमें दूसरों को उनके अधिकारों से और जो कुछ उनका है उससे उन्हें वंचित नहीं करना चाहिए। इसलिए जिस जमीन पर जबरदस्ती कब्जा किया गया है उसे खाली किया ही जाना चाहिए। जिन लोगों को बेसहारा और बेघर कर दिया गया है उन्हें फिर से बसाया ही जाना चाहिए और उन्हें उनका राज्य दिया जाना चाहिए। इस क्षेत्र के देशों को इस बात का आश्वासन मिल जाना चाहिए कि अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत सीमाओं में वे सुरक्षित रह सकेंगे।

इसलिए सभी से हम यह अपील करते हैं, खासतौर से उन लोगों से जो इजराइल को प्रभावित करने की स्थिति में हैं कि वे इजराइल को लेबनान से अविलम्ब वापस हटने पर मजबूर करने में कोई कोर-कसर न छोड़ें। यह एक बड़ी समस्या का समाधान खोजने की लम्बी प्रक्रिया की दिशा में पहला कदम है। हमारी सबसे पहली कोशिश यह होनी चाहिए कि हम व्यापक और अंतिम समाधान की दिशा में एक शांति-प्रक्रिया शुरू करने लिए मिलकर काम करें।

लेबनान की दुखद स्थिति को फिलीस्तीन की दुःखद स्थिति पर आरोपित कर दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना और दूसरे लोग वहां मौजूद हैं। इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और संयुक्त राष्ट्र महासभा में कई संकल्प भी पारित किए गए हैं और हाल ही में हमने कुछ उल्लेखनीय योजनाएं और प्रस्ताव भी तैयार किए हैं। हम इस समस्या के शांतिपूर्ण समाधान

[श्रीमती इन्दिरागांधी]

की दिशा में किए गए किसी भी प्रयास का स्वागत करते हैं। हमें समझौतों और बातचीत की प्रवृत्तियों को प्रारम्भ और प्रोत्साहित करना होगा। प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध पक्षों को ही, जिनमें फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन भी शामिल होना चाहिए, मुख्य भूमिका का निर्वाह करना होगा। इन प्रयासों में बड़ी शक्तियों का पूर्ण सहयोग और समर्थन मिलना चाहिए। मैं माननीय सदस्यों को यह आश्वासन देना चाहूंगी कि इस सिलसिले में भारत पीछे नहीं रहेगा।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती (कलकत्ता दक्षिण) : अमेरिका ने फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन को सुरक्षा की गारंटी दी थी। आप अमेरिका को दोषी क्यों नहीं ठहराते ? वहां फिलिप हबीब ने फिलीस्तीनियों की सुरक्षा की गारंटी दी थी। इस शर्त पर वे वहां थे।

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : इस बात का कोई उल्लेख नहीं किया गया है कि अमेरिका ने गारंटी दी थी।

प्रो० रूप चन्द पाल (हुगली) : इस पर चर्चा की जानी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : नियम इसकी अनुमति नहीं देते। यह कितनी सीधी सी बात है। (**व्यवधान**) प्रोफेसर आप शिक्षित व्यक्ति हैं आप नियम जानते हैं। क्या मजाक है। आप नोटिस दे सकते हैं। क्योंकि नियम इसकी इजाजत नहीं देते, मैं अनुमति नहीं दे सकता। मैं नियमों के अनुसार चलता हूं।

श्री सुनील मैत्रा (कलकत्ता उत्तर पूर्व) : क्या चर्चा करने पर कोई आपत्ति है ?

अध्यक्ष महोदय : आप नोटिस दीजिए। आप चर्चा कराने की मांग नहीं कर सकते। (**व्यवधान**)

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : अमेरिका द्वारा गारंटी दी गई थी। (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : प्रोफेसर आप यह सब अनावश्क रूप से कर रहे हैं। यह क्या मजाक है ? आप नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं। मैं अनुमति नहीं दे सकता।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं भारत सरकार क्यों नहीं···(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : यदि एक प्रोफेसर ऐसा करता है तो मैं क्या कर सकता हूं ? (**व्यवधान**) आप को नियमों को ध्यान में रखना चाहिए।